वैश्वीकरण एवं शान्ति की शिक्षा

Premlata Saini - Assistant Professor, Shrimati Chandrawal Gupta Mahila Teacher Training College, Aburoad, Sirohi, Rajasthan.
Reseacher scholar, Jain Vishava Bharti Institute, Ladnun.

Abstract: भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** की भावना को पोषित करती आ रही है। आज इसे ही नवीन शब्दावली में "**ग्लोबलाइजेशन** या **वैश्वीकरण"** के नाम से जाना जाता है। 21वी शताब्दी में जहाँ अन्तर्राष्ट्रीय समाचारों में आये दिन राष्ट्रों में वैमनस्य, कटुता, संघर्ष और युद्ध की स्थिति बन जाती है, वही दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय जगत में शक्तिशाली राष्ट्र अपनी शक्ति संवर्धन करने हेतु मिसाईल परीक्षण और अणु व परमाणु का आविष्कार कर स्वय को शक्तिशाली राष्ट्र घोषित कर रहे है। इस कारण समूचे विश्व में अशान्ति, भय व अपने अस्तित्व पर संकट को लेकर खतरा मंडरा रहा है। किसी विद्वान ने कहा है कि यदि विश्व में तृतीय विश्व युद्ध हुआ तो वह केवल पत्थरों से लडा जायेगा। इस बात से स्पष्ट है कि तृतीय विश्व युद्ध के दौरान मानव संस्कृति इस संसार में जीवित रहेगी ही नहीं। अतः वैश्वीकरण के कारण सभी राष्ट्र आपस में अन्तःनिर्भर है, वही दूसरी ओर सभी सह–अस्तित्व बनाये रखने, युद्धों की स्थिति से बचाव, शान्ति की शिक्षा, अहिंसा, मानवाधिकारों आदि के पक्षधर है। इस पेपर को लिखने का मेरा यही उद्देश्य है कि समूचे विश्व को शान्ति की शिक्षा के माध्यम से विश्व–बन्धुत्व की भावना, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मानवता, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग व सह–अस्तित्व, अहिंसा तथा शान्ति मूल्यों को अपनाकर मानव संस्कृति इस संसार में कई युगों तक अपना अस्तित्व बनाये रख सकती है।

Key words:– वैश्वीकरण, शान्ति की शिक्षा, अहिंसा, सह–अस्तित्व, विश्व–बन्धत्व की भावना, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं मानव संस्कृति, राष्ट्रीय मानवाधिकार।

प्रस्तावनाः–

शिव परमपिता परमात्मा, है शान्ति का सागर,

नन्हें–नन्हें निमित्त कर कमलों से, शान्ति जग में फैलायेगा।

मिट जायेगा अज्ञान अँधियारा, इस जग से,

विश्व–शान्ति का झण्डा, जग में फैरायेगा।

वैश्वीकरण / सारा विश्व एक गाँव है। 21वी शताब्दी में विश्व के अधिकांश राष्ट्र विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आने के लिए प्रयासरत है। इस कारण अविकसित तथा विकासशील राष्ट्र तकनीकी, कच्चा माल, पूँजी आदि की दृष्टि से विकसित राष्ट्रों नर निर्भरता रखते है। जैसें **रायटन** द्वारा 30 जनवरी, 2014 को जारी आँकड़ों के अनुसार भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा कच्चा तेल आयातक देश बन गया। आँकड़ों के अनुसार भारत ने वर्ष 2013 में प्रतिदिन 38,60,000 बैरल कच्चा तेल आयात किया। (अन्तर्राष्ट्रीय क्रोनोलॉजी, अप्रेल ,2014) इसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी राष्ट्र सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं मानवाधिकारों आदि संस्थागत क्षेत्रों में आपसी अन्तःनिर्भरता रखते है। **ग्लोबलाइजेषन** / जिस प्रकार ग्लोब अपनी धुरी पर धूमता है, उसी प्रकार समस्त विश्व कि उपरोक्त गतिविधियाँ एक–दूसरे से अन्तःसम्बन्धित है।

लगभग गत तीन दशकों से प्रचलन में आया **वैश्वीकरण** शब्द आज पूरे विश्व में एक आँधी की तरह है। प्रारम्भ में आर्थिक सन्दर्भ में प्रयुक्त वैश्वीकरण की अवधारणा उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण का अन्तिम एवं महत्वपूर्ण भाग बनी थी। बाद में जल्दी ही वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने अपना स्वायत्त रूप ऐसा बनाया कि उसकी दखल ने सूचना एवं संचार, तकनीकी, संस्कृति, मीडिया और समाज आदि को प्रभावित किया तथा इन सभी ने वैश्वीकरण को भी प्रभावित किया। (रिषपाल मीणा, 2011) आज सभी राष्ट्र वैश्विक दृष्टि से अन्तःनिर्भर है, और उत्तरी व दक्षिणी भाग के अधिकांश व्यक्ति सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि से जागरूक है। पृथ्वी एक ऐसा ग्रह है, जहाँ सभी देश व व्यक्ति सामान्य अवसरों, सामान्य संसाधनों तथा अपने भविष्य के सामान्य लक्ष्यों को बाँटते है। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि एक देश के राजनैतिक और शक्ति प्रदर्शन की गतिविधियाँ का प्रभाव दूसरे देश पर ना पड़े। यही वैश्वीकरण है। वैश्वीकरण के अन्तर्गत जहाँ एक ओर विश्व गाँव ने सभी राष्ट्रों को ऐ–दूसरे के नजदीक ला दिया है, वही ग्लोब के दूसरे तरफ के देशों के नागरिक भी समान फिल्में तथा शो देखते है, समान पहनावा, खान–पान तथा एक समान भाषा में सम्प्रेषण करते है। (सेवेज और ऑर्मस्ट्राग 1992, टौनी 2000)

वैश्वीकरण की परिभाषाः–

मेलकॉम वाटर्स (1998) के अनुसार वैश्वीकरण की प्रक्रिया में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अन्तःक्रियाओं का पर्याप्त समावेश होता है। इस प्रक्रिया में भौगोलिक राष्ट्रीय सीमाओं का दबाव और बंधन धूमिल हो जाता है। **जेरेमी ब्रेचर और टिम कोस्टलों** (1994) ने कहा है कि वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग राजनीतिज्ञ, प्रोफेसरों आदि ज्यादा पसंद करते है। **उल्फ हजरत** (1996) विश्व–गाँव के सम्बंध में अपने तर्क द्वारा समझाया है कि देशों का अन्तःसम्बन्धित, परस्पर और संस्कृति का मानवीकरण ही वैश्वीकरण है। व्यक्ति द्वारा विकास की पारदर्शी राष्ट्रीयता के बदले बिना अपनी पहचान खोये विभिन्न संस्कृति एवं भाषाओं के मध्य रहना ही वैश्वीकरण है। **जे. एन. पाईरट्स** (1995)ने अकादमिक विषयों के अनुसार वैश्वीकरण को परिभाषित करने का प्रयास किया है। अर्थशास्त्र में वैश्वीकरण अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के समान और पूँजीपत्तियों द्वारा बाजार में सम्बन्धों का विस्तार, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और अन्तर–राज्यीय सम्बन्धों के घनत्वों में वृद्धि पर फोकस डालना, राज्यों की नई भूमिका और वैश्विक राजनीति का विकास करना ही वैश्वीकरण है। समाजशास्त्र के अन्तर्गत वैश्विक स्तर पर वैश्विक समाज का उदय करना। सांस्कृतिक अध्ययन के अन्तर्गत वैश्विक सम्प्रेषण पर फोकस डालने के साथ–साथ प्रमाणिक वैश्विक संस्कृति जैसे **कोकोकोलाइजेशन, मैकडोनाल्डाईजेशन** और **पोस्टोकोलोनियल** संस्कृति शब्दों का प्रयोग ही वैश्वीकरण है। इस प्रकार अलग–अलग विद्वानों ने वैश्वीकरण की परिभाषाओं के सम्बन्ध में अपने विचार दिये है। **गिडिन्स** के अनुसार वैश्वीकरण विभिन्न देशों, संस्कृतियों एवं लोगों के मध्य सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में बढ़ती हुई अन्तःनिर्भरता एवं पारस्परिकता की स्थिति है, जहाँ देश एवं काल की प्रांसगिकता समाप्त हो जाती है। **गिडिन्स** ने वैश्वीकरण के लिए निम्न तत्वों उत्तरदायी माने हैः– पूँजीवाद, अन्तर्राज्य सम्बन्ध, सैनिकवाद और उद्योगवाद।

वैश्वीकरण के उद्देश्यः–

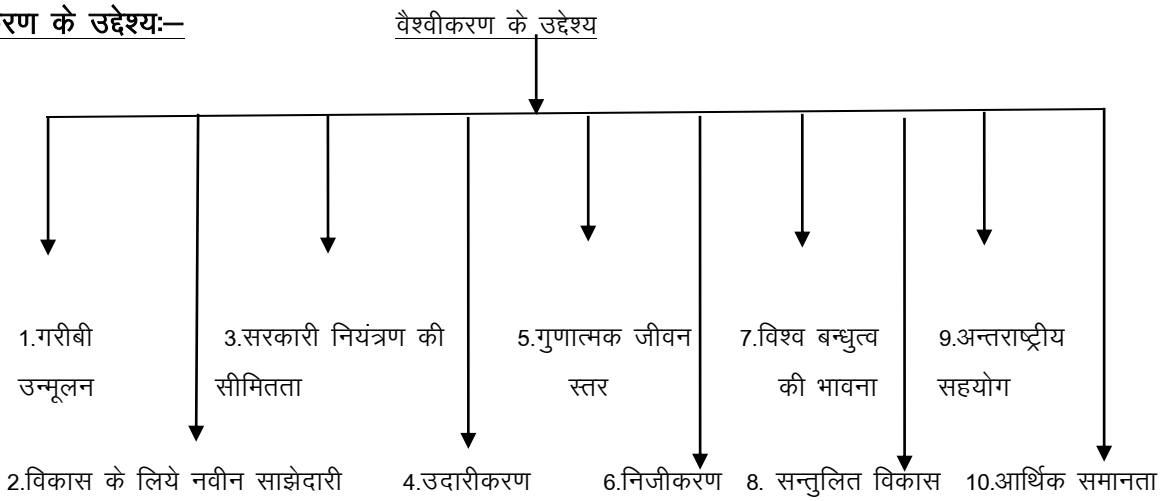

वैश्वीकरण का प्रभावः–

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने समस्त विश्व को विकास के पथ पर तीव्र गति से अग्रसर किया है। विकासशील देशों में विदेशी पूँजी का प्रवाह होने से रोजगार एवं उद्योगों के नये अवसर प्राप्त हुये। दक्षिणी–पूर्वी एशियाई देशों की अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण से प्रभावित हुई। विश्व व्यापार संगठन जैसें निकायों ने मुक्त एवं निष्पक्ष व्यापार के लिए वैश्विक स्तर पर आधार तैयार किया। जैसें वाणिज्यिक प्रक्रियाओं को आउटसोंर्सिग (बी. पी. ओ.) की नीति के विषय में अमेरिका में आशंका व्यक्त की गई कि इससे स्थानिय रोजगार के अवसर समाप्त हो जायेगें। किन्तु अपने प्रयासों के बावजूद भी अमेरिका इस प्रक्रिया को अवरूद्ध नहीं कर पाया। इसी प्रकार कपड़ा क्षेत्र में में कोटा प्रणाली के समाप्त होने के कारण भारत, चीन एवं बांग्लादेश जैसें राज्यों को भी लाभ हो रहा है। विभिन्न देशों द्वारा सामाजिक विषमता को कम करने, सामाजिक वर्ग को सुरक्षा तथा उनके समुचित विकास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण जैसें क्षेत्रों में अधिकाधिक व्यय करें, जिससे स्थानीय स्तर पर योग्यता एवं उत्पादकता में वृद्धि हो। वैश्वीकरण ने सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को संरक्षण एवं प्रोत्साहन दिया। पर्यावरण संरक्षण, प्रदूक्षण, लिंग–भेद, गरीबी, मानवाधिकार और नस्लभेद जैसी समस्याओं का प्रधान कारण मूल्यों का क्षरण है। इन मूल्यों के प्रति जाग्रति का कार्य वैश्वीकरण ने किया है। वैश्वीकरण के कारण औद्योगिक, सूचना एवं संचार तकनीकी तथा प्रौद्योगिक विकास तीव्र गति से हुआ। श्रमिकों की स्थिति में सुधार एवं उद्योगों की उत्पादकता में वृद्धि होने से देश का तीव्र आर्थिक विकास होने की संभावनाएँ प्रशस्त होती है। तकनीकी ज्ञान कौशल एवं विदेशी पूँजी की सहायता से सुदृढ़ औद्योगिक ढ़ाँचा विकसित किया जा सकता है।

वैश्वीकरण के उपरोक्त लाभों के बावजूद भी वैश्वीकरण के नकारात्मक परिणाम भी दृष्टिगोचर हो रहे है। विश्व के देशों को निकट लाने एवं विश्व सरकार की स्थापना के स्थान पर वैश्वीकरण ने विश्व के सामने आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरण संबंधी समस्याओं को जन्म दिया है। राज्य, लोकतन्त्र, नागरिक समाज, संप्रभुता, राष्ट्रीय राज्यों की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह लग रहे है। वैश्वीकरण एवं आर्थिक उदारीकरण ने राज्यों की संप्रभुता का क्षरण किया है। राष्ट्रों की आर्थिक नीतियों एवं विकास की प्राथमिकता के निर्धारण में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संगठनों की भूमिका निर्णायक परिलक्षित हो रही है। उदारीकरण के कारण बहुराष्ट्रीय निगम एवं स्वंय सेवी संगठनों की निरन्तर बढ़ती भूमिका एवं सक्रियता के कारण बहुराष्ट्रीय निगम एवं स्वंय सेवी संगठन **"राज्य के भीतर राज्य"** की स्थिति को जन्म दे रही है। सयुक्त राज्य संघ के एक अध्ययन के अनुसार गरीब व अमीर देशों के आर्थिक स्तर में तीव्र गति से बढ़ने के कारण अफ्रीका व एशियाई देशों में असमानता, गरीबी, कुपोषण, अकाल, शिक्षा का अभाव आदि समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। वहीं विकसित राष्ट्रों में अति उत्पादन की समस्या है। वैश्वीकरण ने पूँजीवादी व्यवस्था का विकास किया है।

वैश्वीकरण ने समाज को जोखिम की ओर घकेला है। यू. बैंक के अनुसार सम्पूर्ण विश्व स्वनिर्मित अनिश्चितताओं जैसें भोपाल गैस काण्ड, चेरनोबिल दुर्घटना, मेडकाऊ बीमारी, ग्रीन हाउस प्रभाव एवं ओजोन का क्षरण आदि पर्यावरण समस्याओं का सामना कर रहा

है। वहीं विकसित देशों का औद्योगिक कचरा, प्लास्टिक, इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों का निस्तारण भारी समस्या बनता जा रहा है। वैश्वीकरण ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकीकरण में स्थानीय समाज, संस्कृति, रीति– रिवाज, प्रथाओं के जीवित रहने एवं अपनी पहचान बनाए रखने का संकट उत्पन्न किया है। इसने देशान्तरण की प्रक्रिया को गति दी है। इसके साथ ही राष्ट्रीय राज्यों की लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में आर्थिक असमानता, उग्र दलबंदी, खर्चीली चुनाव पद्धति, राजनैतिक अपराधीकरण तथा भ्रष्ट प्रशासनिक ढ़ाँचे को विकसित किया है। जिसमें भ्रष्टाचार, लालफीताशाही आदि बुराईयाँ विद्यमान है।(प्रतियोगिता टुडे, 2009) वैश्वीकरण ने आतंकवाद, परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों एवं शक्ति का केन्द्रीयकरण जैसी विश्व व्यापी समस्याओं को भी जन्म दिया है। आज विश्व दो शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों अमेरिका व रूस में बँट गया है। परमाणु व मिसाइलों का परीक्षण करके शक्ति सम्पन्नता को दर्शाते है। जैसे 10 फरवरी, 2014 को ईरान ने बिना मिसाइल का परीक्षण किया तथा लगळाग 2000 किलोमीटर की दूरी तक की मारक क्षमता वाली शदाब जैसी मिसाइलों का भी जखीरा मौजूद, जिसके निशाने पर मध्य पूर्व के देशों में स्थित अमेरिकी सैन्य अड्डे और पूरा इजरायल है। (अन्तर्राष्ट्रीय क्रोनोलॉजी, अप्रेल ,2014)

वैश्वीकरण एवं शान्ति की शिक्षाः–

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में जहाँ सभी राष्ट्र एक–दूसरे के नजदीक व परस्पर अन्तःनिर्भर हो चुके है, वहीं इस प्रक्रिया के कुछ विध्वंसकारी परिणाम भी सामने आये है। कई अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिज्ञ, गैर–सरकारी संगठन, समूदाय आदि वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों को महसूस कर रहे है। तथा आने वाली पीढ़ी के लिए वैश्विक शिक्षा या शान्ति की शिक्षा को एक प्रभावशाली उपकरण मानते है। आज यद्यपि मानव सभ्यता उन्नति और विकास की ओर अग्रसर हो रहा है फिर भी विश्व में सर्वत्र अशान्ति, अव्यवस्था, विकास की होड़, शक्ति–सम्पन्नता का प्रदर्शन व साम्राज्यवादी प्रवृति, कमजोर राष्ट्रों के षोषण तथा कूटनीतिज्ञ चालें चलने की प्रवृति आदि बढ़ रही है। पूँजीवादी राष्ट्र कमजोर देशों की अस्त्र–शस्त्रों से सहायता दे कर सम्पूर्ण विश्व के वातावरण को अशान्त बनाये रखना चाहते है। पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद के कारण आज विश्व में चारों ओर अशान्ति फैली हुई है।(कृष्णा आचार्य, 2014) वैश्वीकरण से उत्पन्न समस्याओं को विश्व व्यापक रूप से हल करने के लिए सभी राष्ट्रों को वैश्विक शिक्षा/शान्ति एवं मूल्यों की शिक्षा को अपनाना होगा जिससे इन समस्याओं को हल किया जा सके।

शान्ति की शिक्षा की परिभाषाः–

इयाान हैरिस एवं जॉन साइनोट के अनुसार शान्ति की शिक्षा का आशय शिक्षण के उन सभी प्रयासों से है जो शान्ति की इच्छा की पूर्ति करते है, संघर्षो को समाप्त करने के लिए अहिंसक उपाय बताते है तथा असमानता एवं अन्याय को उत्पन्न होने से रोकने के लिए मानव में विभिन्न कौशल का विकास करते है। **जैम्स पेज** के अनुसार शान्ति की शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति विशेष का शान्ति के समर्थको के मध्य आत्मविश्वास उत्पन्न किया जाता है जो कि छात्रों को युद्ध एवं सामाजिक न्याय के प्रभाव, शान्ति के मूल्यों एवं सामाजिक संरचना के आर्दष स्वरूप का ज्ञान, सम्पूर्ण विश्व के प्रति प्रेम, शान्तिपूर्ण भविष्य का निर्माण, स्वंय एवं अन्य लोगों की

देखभाल संबंधी गतिविधियों एवं सूचनाओं को प्रदान करते है।(एच. जी. सिहं, एस.के. दुबे, राजकुमारी शर्मा तथा जेड. एन. पुरोहित, 10.10.2013)

शान्ति की शिक्षा की आवश्यकताः–

संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 24 अक्टूबर, 1945 को प्रथम व द्वितीय विश्व युद्धों की भयानकता को देखते हुए, की गई। जिसके उद्देश्य विश्व में शान्ति एवं मानवाधिकारों की रक्षा करना मुख्य रहा, ताकि भावी पीढ़ियों को युद्धों की भयानकता से बचाया जा सके। यूनिसेफ व यूनेस्को शान्ति की शिक्षा के अग्रदूत माने जाते है। इनके अनुसार शान्ति मूल्यों के द्वारा व्यक्ति का तथा व्यक्ति व प्रकृति के प्रति समरसता का दृष्टिकोण अपनाकर ही विश्व शान्ति की स्थापना की जा सकती है। सुसंगत तथा व्यवहार मूल्य प्रणाली को विश्व शान्ति हेतु ऐसी प्रक्रियाओं के माध्यम से लागू किया जाए, जो समस्त मानवीय, सामाजिक जीवन के प्रति तर्कसंगत, शान्तिपूर्ण तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित हो। शान्ति की शिक्षा की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से हैः–

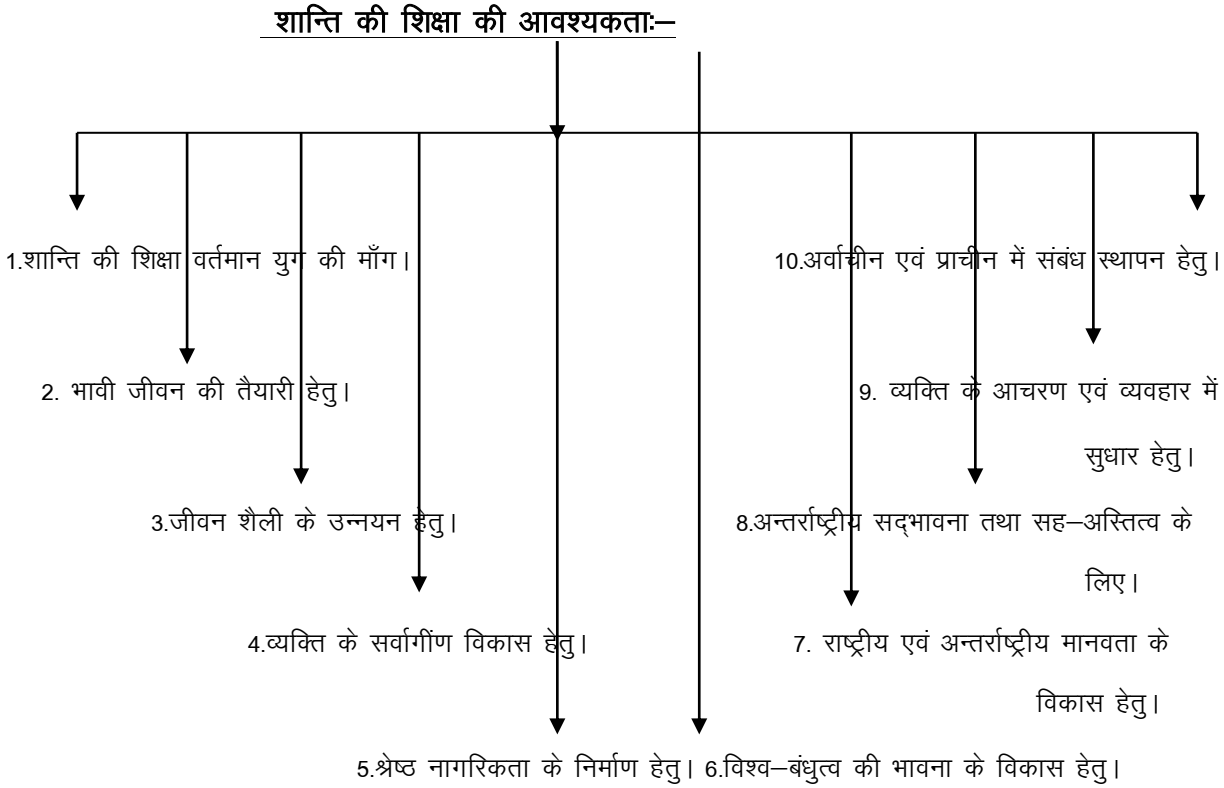

शान्ति की शिक्षा के उद्देश्यः–

यूनिसेफ द्वारा शान्ति की शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित वर्गो में निर्धारित किये है

क्रम संख्या	उद्देश्य
	संज्ञानात्मक उद्देश्य
1.	स्वंय के प्रति जागरूकता की आवश्यकता।
2.	संघर्ष व शान्ति की प्रकृति की आवश्यकता
3.	संघर्ष के कारणों की पहचान की योग्यता और अंहिसा के प्रति दृढ़ संकल्प।
4.	संघर्षो का विश्लेषण।
5.	संघर्षो को मिटाने और शान्ति स्थापन करने के लिए सामुदायिक यान्त्रिकता में ज्ञान का विस्तार करना।
6.	योग–साधना की प्रक्रिया।
7.	अपने कर्त्तव्य अधिकारों की समझ का विकास करना।
8.	वैयक्तिक एवं सामाजिक स्वतंत्रता की समझ का विकास करना।
9.	सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूता।
10.	न्यायिक अभिज्ञान।
	कौशल
1.	आत्म अभिव्यक्ति, सुनने की क्षमता, योजना बनाना, आदि की सम्प्रेषण क्षमता का विकास करना।
2.	दृढ़तापूर्वक विचार रखना।
3.	सहयोग की योग्यता विकसित करना।
4.	अभिकथन करना।
5.	आलोचनात्मक चिन्तन की क्षमता का विकास करना।
6.	न्यायिक संबंधी आलोचनात्मक चिन्तन की योग्यता।
7.	प्रकाश–चित्रण की छपाई की योग्यता का विकास करना।
8.	भावनाओं का आदान–प्रदान की क्षमता का विकास करना।
9.	समस्या–समाधान की क्षमता का विकास करना।
10	समस्या के समाधानों के विकल्पों को खोजने की योग्यता का विकास करना।
11.	निर्माण हेतु संघर्ष के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञा करना।
12.	समाज में शान्ति स्थापन्न हेतु सहभागिता।
13.	परिवर्तन के साथ जीवन जीने की क्षमता का विकास करना।
	अभिवृत्ति
1.	आत्म–सम्मान, सकारात्मक आत्म–छवि और दृढ़ आत्म–सम्प्रत्यय की क्षमता का विकास करना।
2.	सहिष्णुता, दूसरों द्वारा स्वीकार्य, विभिन्नता का सम्मान करना।
3.	अभिभावकों व बच्चों की जिम्मेदारियों तथा अधिकारों का सम्मान करना।
4.	पक्षपात के प्रति के प्रति जागरूकता।

5.	लैगिक समानता।
6.	समाधान।
7.	समानुभूति।
8.	सामाजिक सुदृढ़ता।
9.	सामाजिक कर्त्तव्य।
10.	स्मानता एवु न्याय की समझ।
11.	आनन्द के साथ जीना।

शान्ति की शिक्षा का पाठ्यक्रमः–

वैश्विक शान्ति की शिक्षा का प्रचलन 1970 ई. में हुआ, जिसे यूनिसेफ मेना क्षेत्र द्वारा सर्वप्रथम अपनाया गया। इसमें पर्यावरण और पारिस्थितिकी, शान्ति, सहिष्णुता, संघर्ष का परित्याग, वैयक्तिक स्वास्थ्य, सहयोगात्मक कौशल, बहुसंस्कृतिकरण, मानवीय मूल्यों पर तुलनात्मक दृष्टिकोण और मानव और बच्चों के अधिकारों जैसें विषयों को सम्मिलित किया गया। हैरिस (2004) ने शान्ति की शिक्षा को पाँच श्रेणी में विभाजित किया हैः–

1. अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा
2. पर्यावरणीय शिक्षा
3. संघर्ष से बचाव की शिक्षा।
4. विकास की शिक्षा
5. मानवाधिकारों की शिक्षा

शान्ति की शिक्षा के सन्दर्भ में अमेरिका के मुख्य विशेषज्ञ **रेयरडन बैटी (1988)** यह विश्लेषण किया कि वर्तमान में किण्डरगार्डन से लेकर उच्च शिक्षा तक 100 से ज्यादा शान्ति की शिक्षा के पाठ्यक्रम निर्धारण हेतु मार्गदशिकाएँ मौजूद है। उन्होनें निष्कर्ष निकाला कि शान्ति की शिक्षा के अन्तर्गत क्या सम्मिलित किया जाये ? इसके लिए कोई स्पष्ट, सीमांकित और प्रमाणिक तरीका मौजूद नहीं है। उन्होंने अमेरिका की समकालीन विशेषताओं के विश्लेषण आधार पर नौ विषय शान्ति की शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किये– सहयोग, संघर्ष से बचाव, अहिंसा, सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, विश्व संसाधन, वैश्विक पर्यावरण और बहुसंस्कृति की समझ। इन सभी क्षेत्रों में संज्ञानात्मक कारकों के साथ–साथ अभिवृत्ति एवं व्यावहारिक कारक भी शामिल है।

मोन्टेसरी ने शान्ति की शिक्षा के संवर्धन हेतु तीन अन्तःसंबंधित स्तर बताये हैः– वैयक्तिक, सामुदायिक तथा वैश्विक। वैयक्तिक स्तर पर व्यक्ति की स्वंय के प्रति जागरूकता (शरीर, मन, संवेग आदि), सामुदायिक स्तर पर व्यक्ति के अन्य व्यक्ति के संबंध (विश्वास, स्वतंत्रता आदि) और वैश्विक स्तर पर संस्कृति एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता शामिल है। इसी प्रकार अलग–अलग विद्वानों, मनोवैज्ञानिकों एवं दार्शनिकों ने शान्ति की शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम निर्धारित किये है।

शान्ति की शिक्षा का फ्रेमवर्कः– (अ) शान्ति की शिक्षा की विषय–वस्तु

शिक्षण– अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में शान्ति की शिक्षा हेतु विषय–वस्तु किस प्रकार की होनी चाहिए ?इस पर अलग–अलग विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये है– **बर्न्स एवं एसपेसलाग** (1996) ने पाँच आयाम निर्धारित किये है –

1. पर्यावरण 2. अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था 3. मानवाधिकार 4. विकास और 5. शिक्षा। इसी प्रकार संघर्ष के मुख्य कारणों में दो मुख्य फ्रेमवर्क शान्ति की शिक्षा की विषय–वस्तु के निर्धारित किये है जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय मानवीयता एवं मानवाधिकार के नियम,

सुरक्षा के संरचनात्मक विकल्प और हिसां के सूक्ष्म/ व्यापक स्तर पर संघर्षो के बिना अधिगम कौशल शामिल है। ये युद्धों को समाप्त करने हेतु अधिगम मॉडल एवं फ्लॉवर पटेल का शान्ति की शिक्षा का मॉडल है।(तोह, 2004)

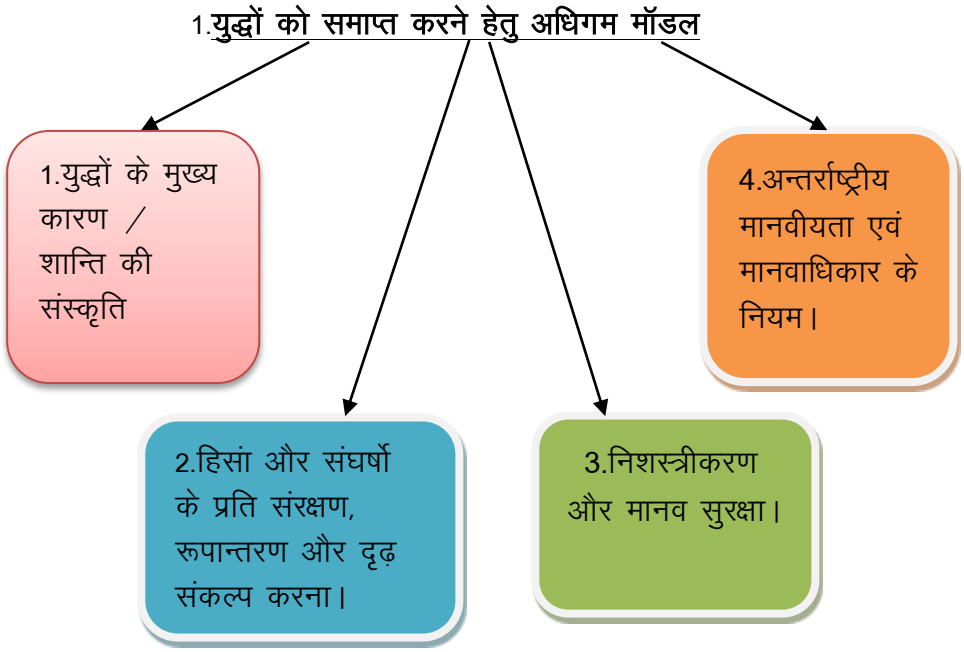

फ्लॉवर पटेल ने शान्ति की शिक्षा का मॉडल दिया है जिसमें मूल्यों, अभिवृत्ति परम्परागत और आधुनिक व्यवहार, जीवन के प्रति सम्मान, विचारों, सहयोग आदि शामिल है।

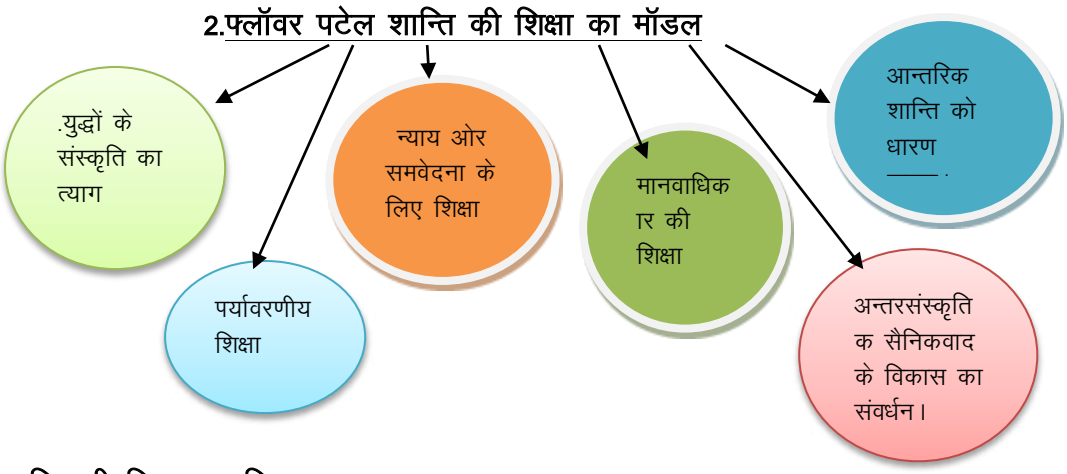

(ब) शान्ति की शिक्षा का शिक्षणः–

कक्षा–कक्ष शिक्षण के अन्तर्गत अध्यापक को छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए अवसर देने चाहिए। अध्यापक को छात्रों को शान्ति बनाये रखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। अध्यापक को अपने जीवन के अनुभवों और अच्छे पलों को छात्रों सुनाना चाहिए ताकि उनमें तार्किक और खोज प्रवृति का विकास हो सके। केवल किताबों को पूरा करा देना ही काफी नही। छात्रों को स्वतंत्रता देनी चाहिए। इसके लिए शान्ति की संस्कृति के अन्तर्गत शक्ति आधरित आम सहमति, मानवाधिकार, लैगिक समानता, समानता, निशस्त्रीकरण, लोकतांत्रिक सहभागिता आदि को अपनाना चाहिए।

निष्कर्षः–

शान्ति की शिक्षा के द्वारा हम विश्व समाज में शान्ति की संस्कृति एवं उद्देश्य को अपनाकर शान्ति की स्थापना कर सकते है। वैश्वीकरण के नकारात्मक परिणामों को दूर कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति की शिक्षा के द्वारा ज्ञान, कौशल तथा व्यवहार में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। जिससे व्यक्ति शान्ति की गतिविधियों, नकारात्मक व सकारात्मक शान्ति, प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष हिसां, मानवाधिकार और अपनी जिम्मेदारियों को समझकर शान्ति स्थापना में योगदान दे सके। इसके लिए अध्यापक सहयोग, सक्रिय सहभागिता, व्यक्ति–इतिहास, कहानी विधि, भूमिका निर्वाह ध्यान आदि के माध्यम से शान्ति की स्थापना आने वाली पीढ़ियों में कर सकते है।

सन्दर्भ सूचीः–

1. आचार्य, कृष्णा, 01–02, 2014. "शान्ति की शिक्षा के द्वारा सामाजिक समरसता", नया शिक्षक, वोल्यूम 56 न. 1 माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर
2. Brecher, Jeremy & Tim Costello. 1994. Global Village or Global Pillage: Economic Reconstruction from the Bottom Up. Boston: South End Press.
3. Foutain, Susan. 06, 1999, Peace Education in Unicef. Programme division unicef, New York U.S.A. united nation children's fund programme publication
4. गुप्ता, एल. सी. 04,2014," भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा कच्चा तेल आयातक देश". करन्ट जी. के. अन्तर्राष्ट्रीय क्रोनोलॉजी, पी.एम. सी. पब्लिर्शस एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर, भरतपुर पृष्ठ सं 30
5. Bohm, D. 1996. *On dialogue.* New York: Routledge
6. Hannertz, Ulf. 1996. Transnational Connections: Culture, People, Places. London: Routledge
7. Harris, I. 2004. Peace education theory. *Journal of Peace Education* 1(1): 5-20.
8. Kester, K. 2007. Peace education: Experience and storytelling as living education. *Peace and Conflict Review* 2, no.
9. Kester, K. 2008. Developing peace education programs: Beyond ethnocentrism and violence. *Peace Prints: Journal of South Asian Peacebuilding* 1(1): 37-64.
10. मीणा, रिषपाल. 10, 2011 "वैश्विकरण से जनजातिय समाज में परिवर्तन". राजस्थान समाजशास्त्र जनर्ल्स Vol. 3 page no.107
11. Montessori, M. 1949. *Education and peace*. Oxford, England: CLIO, 1995.
12. Piertse, J.N. 1995. "Globalization as Hybridization." in M. Featherstone et al. (eds.), GlobalModernities. London: Sage Publications.
13. Reardon, Betty. 1988. Educating for Global Responsibility. New York: Teachers College Press.
14. Reardon, B. 2001. *Education for a culture of peace in a gender perspective.* Paris: UNESCO.
15. Savage, T. & Armstrong, D. (1992). *Effective Teaching in Elementary Social Studies* (2nd ed). New York: Macmillan Publishing Co.
16. सिंह, एच. जी., दुबे एस.के., शर्मा राजकुमारी तथा पुरोहित, जेड. एन. " भारतीय समाज में शिक्षा", राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा. लि. आगरा पृष्ठ 313–355, 507–515.
17. Touraine, A. (2000). *Can We Live Together? Equality and Difference*. Translated by David Macey. Stanford, CA: Stanford University Press.
18. Toh, S.H., and Cawagas, V.F. 1991. *Peaceful theory and practice in values education.* Quezon City: Phoenix. Introduction, 2-19; Conclusion, 221-231.